بِسْمِ لِللهِ الرَّحْمِنِ الرَّحِيْمِ

AL-QURAN THE CRITERION



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

अल-कुरआन क्या कहता है

माता पिता और बच्चों के संबंधों बारे में

संकलक: मुहम्मद शेख #अब्दल्लाह #क्रआनकाबशर

04 सितंबर 2010 को IIPC कनाडा द्वारा प्रकाशित



66



म्हम्मद शेख को शेख अँहमद दीदात द्वारा 1988 में डरबन ,दक्षिण अफ्रीका के IPCI दवारा आयोजित दावा और तेलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण लेने के लिए चना गया था। इस दावा और तुलनात्मक धर्म प्रशिक्षण के पूरा होने पर महम्मद शेख को IPCI दॅवारा एक प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदत ने प्रस्तुत किया था



दान करें :-

शीर्षक:-इन्टरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेन्टर कनाडा 7060 मकलाउघलीं रोड. मिससीससाउगा ONL5W1W7 कनाडा

बैंक का नाम- TD CANADA TRUST

www.themuslim500.com

अकाउंट नम्बर:5042218 टांसिट नम्बर- 15972 कनाडा IBAN - 026009593

(अमेरिका से दान देने वालों के लिए) ABA026009593

स्विफ्ट कोड:TDOMCATTTOR इंसटीटयशन नम्बर- 004 शाखा का नम्बर:1597

132 मैन ST साउथ, रॉकवुड, ON NOB 2KO ,कनाडा 1-800-867-0180



अभी पंजीकरण करें



www.iipccanada.com info@iipccanada.com



सोशल मीडिया नेटवर्क

You Tube



facebook



Available on the App Store



Google play



1 Instagram



ÉTV



androidty



Roku























mI Mi Box





























पुस्तिका का परिचय

पुस्तिका के बारे में यह मुहम्मद शेख द्वारा संकलित एक व्याख्यान संदर्भ पुस्तिका है यह हर विषय के व्याख्यान के अनुसार है इस पुस्तिका का उद्देश्य पाठक को कुरआन के विषय से परिचित कराना है। इसका अध्ययन स्वयं किया जा सकता है और यह हर विषय के वीडियो व्याख्यान को भी पूरा करता है जो इसके ही साथ होता है। वीडियो व्याख्यान में चर्चा के अनुसार इस प्स्तिका में विषय से संबंधित आयत (क्रआन की आयतें) हैं। व्याख्यान के बाद प्रश्न उठाए जाते हैं, और उनके उत्तर आयत द्वारा दिए जाते हैं। वीडियो व्याख्यान और उनके व्याख्यान संदर्भ प्स्तिकाएं हमारी वेबसाइट www.iipccanada.com पर उपलब्ध हैं। यहां दिए गए क़ुरआन के संदर्भ संपूर्ण नहीं हैं, लेकिन विषय का मूल सार प्रस्त्त करते हैं। इस प्रकाशन में जिन संदर्भों को बाहर रखा गया है, उन्हें किसी भी अच्छी सहमति का उपयोग करके शोध किया जा सकता है और यह पता चलेगा कि इस प्रकाशन में पेश किया गया चयन पूरे अन्क्रम में सामंजस्य स्थापित करेगा। यह आशा की जाती है कि मुस्लिम(आज्ञाकारी) पाठक इन आयतों को अपने अरबी पाठ के साथ याद करेंगे और अपने मित्रों और सहयोगियों को दावत (इस्लाम का प्रचार) में संलग्न करेंगे, और अपनी सलाह/प्रार्थना में भी इसे पढ़ सकेंगे। इस तरह, प्स्तिका रोज़मर्रा की ज़िंदगी में मुस्लिम के लिए एक उपयोगी उपकरण बन जाती है - इंशाअल्लाह। आयत का अन्वाद मुहम्मद शेख ने किया है। विषय के संबंध में किसी भी प्रश्न, टिप्पणी या सुझाव का ईमेल के माध्यम से किया जा सकता है: info@iipccanada.com

AL-QURAN THE CRITERION



मुहम्मद शेख के बारे में

मुहम्मद शेख इस्लाम और तुलनात्मक धर्म पर एक सार्वजनिक वक्ता हैं। उनके व्याख्यान कुरआन के पाठ पर आधारित हैं जो कई गलत धारणाओं को दूर करने, प्रामाणिक इस्लामी

मान्यताओं को प्रस्तुत करने और कुरआन के अपने आंतरिक सब्त के आधार पर तर्कसंगत और उद्देश्य विश्लेषण के लिए अपील करने का काम करते हैं। राजनीतिक या सांप्रदायिक पक्ष लिए बिना, वह लोगों को यह समझने और विश्लेषण करने के लिए कहते है कि कुरआन सबसे पहले किसी विषय के बारे में क्या कहता है, क्योंकि यह कुरआन है जो इस्लाम का प्रमुख आधिकारिक पाठ और अल्लाह/भगवान का वचन और मानव जाति के लिए स्पष्ट सच्चाई है। मुहम्मद शेख को कराची पाकिस्तान से शेख अहमद दीदत द्वारा 1988 में IPCI डरबन दक्षिण अफ्रीका द्वारा आयोजित दावाह और तुलनात्मक धर्म पर प्रशिक्षण से गुजरने के लिए चुना गया था। इस दावाह कोर्स के पूरा होने के बाद मुहम्मद शेख को IPCI से एक प्रमाण पत्र प्रदान किया गया था जिसे स्वयं माननीय शेख अहमद दीदात ने प्रस्तुत किया था। **AL-QURAN THE CRITERION**



INTERNATIONAL
ISLAMIC PROPAGATION
CENTRE CANADA

IIPC-इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर के बारे में

इंटरनेशनल इस्लामिक प्रोपेगेशन सेंटर (IIPC) एक दावाह संगठन है जिसका उद्देश्य अल-कुरआन अल्लाह/भगवान की पुस्तक को की स्थापना 1987 में मुहम्मद शेख द्वारा

बढ़ावा देना है, IIPC की स्थापना 1987 में म्हम्मद शेख द्वारा कराची, पाकिस्तान में की गई थी। हालाँकि IIPC का वर्तमान स्थान एक पंजीकृत धर्मार्थ संगठन के रूप में रॉकवुड, कनाडा में है। यह मुहम्मद शेख द्वारा दिए गए व्याख्यानों के माध्यम से अल-कुरआन को समझने और सराहना करने के लिए सभी धर्मों और आस्था रखने वाले लोगों को आमंत्रित करता है, और यह आयोजन, मुद्रित प्रकाशनों इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रोडक्शंस, इंटरनेट टीवी द्वारा प्रसारण और इसकी वेबसाइट के माध्यम से जनता तक पहंचने का प्रयास करता है। केंद्र अल-इस्लाम को अल्लाह/भगवान की आयत(निशानी) के आधार पर अपने प्राचीन रूप में प्रचारित करने का प्रयास करता है ताकि आम जनता मुफ्त में सीखने की सामग्री के माध्यम से अपनी गतिविधियों से लाभान्वित हो सके और वक्ता के साथ सीधे परामर्श करे अपने दैनिक जीवन में अल-क़्रआन के अभ्यास और समझ के बारे में। केंद्र का कोई राजनीतिक या सांप्रदायिक संबद्धता नहीं है और यह केवल एक धर्मार्थ आधार पर फि-सबील अल्लाह चलाया जा रहा है। हम सभी म्सलमानों से अल्लाह/भगवान के लिए हमारे साथ हाथ मिलाने का अनुरोध करते हैं और दावाह के हमारे मिशन को समर्थन करने का अनुरोध करते हैं (यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण देने के लिए)

अल- कुरआन से हमारा सिद्धांत

याद करो जब अल्लाह/भगवान
ने उन लोगों से, जिन्हें किताब
प्रदान की गई थी, वचन लिया
था कि उसे लोगों के सामने
भली-भाँति स्पष्ट करोगे उसे
छिपाओगे नहीं।" किन्तु उन्होंने
उसे पीठ पीछे डाल दिया और
थोड़ी कीमत पर उसका सौदा
किया कितना बुरा सौदा है
जो ये कर रहे है!

आल-ए-इमरान 3:187



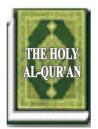
पढ़!

अपने रब/भगवान के नाम के साथ अल-क़्रआन अल्लाह/भगवान की किताब

अल-कुरान से 6237 में से सिर्फ दो आयतें।

और हमने
कुरआन को नसीहत
के लिए अनुकूल
और सहज बना
दिया है। फिर क्या
है कोई नसीहत
करनेवाला?

54:17



क्या वे कुरआन में सोच-विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह/भगवान के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते।

*मानवता की घोषणा

*दया और ब्द्धि का झरना।

*लापरवाह के लिए एक चेतावनी।

*भटके ह्ए के लिए एक मार्गदर्शक।

*संदिग्ध के लिए एक आश्वासन।

*कष्ट के लिए एक धीरज।

*निराश लोगों के लिए एक आशा।

अल-हदीद 57

20.जान लो कि निश्चित ही सांसारिक जीवन, खेल और मनोरंजन हैं और जीनत/ आकर्षण/अलंकरण है और एक दूसरे के बीच अभिमान/गर्व करना और संपत्ति और बच्चों में आपस में अधिकता/वदधि करना। जैसे उदाहरण बारिश का जो की किसानों/इनकार करने वालों को उसके उगने की जरखेजी/उपजाऊपन आश्चर्य चिकत कर देती है. फिर वह सख जाती है बस तू देखता है उसको पीला होते हए फिर वह ट्कड़ों में टूट/चूर -चर हो जाता है, और अंत में कठोर अजाब/सजा है और अल्लाह/भगवान से क्षमा और रज़ा/सहमति है। और सांसारिक जीवन नहीं है सिवाय धोखे का साजो सामान है।

अल-बक़रा 2

201.और उनमें से जो कहता है ऐ हमारे रब/पालनेवाले हमें इस दुनिया में अच्छा दे और आखिरत/अंत में अच्छा दे और हमें आग के अज़ाब/सज़ा से बचा ले।

ٱنْحَدِيْدِ ٥٥

اَلۡبُقَرَةِ ٢

وَمِنْهُمُّمِّنَ يَقُوُلُ رَبِّنَا أَبْنَا فِي اللَّنْيَا حَسَنَةً وَ فِي الْاحِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَاعَنَ اسَالنَّارِ ﴿

अल-मुनाफ़िक्नून 63

9.ऐ वह लोगों जो ईमान/विश्वास लाए। तुम्हारी संपत्ति और तुम्हारी सन्तान तुम्हारा ध्यान ना फेर दें अल्लाह/भगवान के ज़िक्र/स्मरण के बारे में। बस जो कोई वह करेगा बस वही नुक़सान/हानी उठाने वाले होंगे।

सबा 34

37.और न तो तुम्हारी संपति और न ही तुम्हारे बच्चे तुम्हें हमारी निकटता दिला सकते हैं सिवाय जो ईमान/विश्वास लाए और सही कर्म किए। तो वे वही हैं जिनके लिए कई पुरस्कार हैं उन्होंने जो किया उसके लिए। बस वह ही हैं जो सुरक्षित कमरों में होंगे।

अल-अनआम 6

160.जो कोई अच्छाई के साथ
आएगा बस उसके लिए उसकी
अनुरूप दस नेकियाँ/अच्छाईयां
हैं, और जो कोई बुराई के साथ
आएगा बस प्रतिफल नहीं है
उसके लिए सिवाय उसकी
अनुरूप एक बुराई है। और वह
अत्याचार नहीं किए जाएंगे।

ٱلْمُنْفِقُونَ ٦٣

يَّايَّهُا الَّذِيْنَ امَنُوْ الْاتُلْهِكُمْ اَمُوَائِكُمْ وَلَا اَوْلَاذُكُوْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ فَاوْلَالِكَ هُوالْخُسِرُوْنَ ۞

سباءِ ۲۶

وَمَا آَمُوَالُكُوُ وَلِآاُ وَلِادُكُوْ بِالَّذِي تُقَرِّبُكُوْ عِنْكَ نَازُلُغَى الْاَمْنَ امَنَ وَعَلَى صَالِحًا فَاوْلِلِكَ لَهُوْجَزَاءُ الضِّعْفِ بِهَاعِلُا وَهُوْ ذِقِى الْغُرُفْتِ امِنُوْنَ ₪

الكانعام ٢

مَنُ جَاءَ بِالْحُسَنَةِ فَلَهُ عَشُرُامُثَالِهَا وَمَنُ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلا يُجُنْزَى إلَّامِثُلَهَا وَهُمُلايُظُلُمُونَ ﴿

अल-इसरा 17

64.और उनमें से किसी पर तेरी क्षमता हो, उसे अपनी आवाज़/ ध्विन से भड़का दे और उन पर अपने कल्पनाओं को और अपनी पुरुषोचित तौर शैलीयों को आमद/आयात कर और उनके संपत्ति और बच्चों में सहभागिता कर और उनसे वचन कर और नहीं है उनसे शैतान का वचन सिवाए धोखा के।

अल-अनआम 6

137.और इसी तरह सहभागीयों में से अधिकांश के लिए उनके भागीदारों ने अपने बच्चों की हत्या करना ज़ीनत/आकर्षण/ अलंकरण बना दिया ताकि वह उनको नष्ट कर दें और उन पर अपने दीन/निर्णय का वस्त्र पहना दें अगर अल्लाह/भगवान चाहता तो वह ऐसा न करते फिर छोड़ दे उनको और उसको जो वह घढ़ते/आविष्कार करते हैं।

اَلْاسْراءِ ١٧

وَاسْتَفْزِزْمَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكُهُمْ فَى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِنْ هُمْرً وَمَايَعِنْهُمُ الشَّيْطَنُ الْاَعْرُوْرًا الْآ وَمَايَعِنْهُمُ الشَّيْطَنُ الْآعُرُورُا الْآ

الأنعام

ۅؙۘڲڬ۬ڸڬۯؾۜڹ ڸػؿؚؽؙڔۣڝٚٵڶؠٛۺٝڔڮؽؙڽ ڨؙٮؙڒڴٲٷڵٳڿۿؚۮ ڞؙڒڴٲٷۿۮڸؽؙۯۮٷۿۮ ۅؘڶؽڶؠؚڛؙۏٵۼڸؠؙۮۮؽڹۿڎ ڡؙڬۯۿؙ؞ٛٷڝٵؽڡ۬ڗٛٷڽ ڡ۫ڬۯۿؙ؞ٛٷڝٵؽڡ۬ڗٛٷڹ۞

अल-मुमताहिन्ना 60

12 ऐ नबी/भविष्यवक्ता विश्वामी स्त्रियाँ तुझसे बेअत/सौदा करने के लिए तेरे पास आएं उस पर की वह अल्लाह/भगवान के साथ किसी चीज को सहभागी नहीं करेंगी और वह चोरी नहीं करंगी और वह जिना/व्याभिचार नहीं करेंगी और वह अपनी औलाद का हत्या नहीं करेंगी और वह उस पर लांछन/कलंक के साथ इफ़्तरा/गढती हुई नहीं आएंगी जो उनके हाथों और उनके टांगों के बीच है और वह मारूफ़/जाने पहचाने में तेरी अवज्ञा नहीं करेंगी बस उनसे बेअत/सौदा कर ले और उनके लिए अल्लाह/भगवान से क्षमा चाहो। निश्चित ही अल्लाह/भगवान क्षमा करने वाला, रहम/दया/कृपा करने वाला है।

अल-इसरा 17

31.और तुम अपनी बच्चों को दिरद्रता के भय से हत्या ना करो। हम उन्हें भी रिज़्क़/ जीविका देते हैं और तुम्हें भी। निश्चित ही उनकी हत्या बड़ी ख़ता/गलती है।

اَلْمُمْتَحِنَة ٢٠

يَايَهُاالنَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنْتُ يُبَايِغُنُكَ عَلَى اَنْ لَا يُثْنُورُنَ بِاللهِ شَيْئًا وَلَا يَقْتُلُنَ اوْلَا يَرْنِنَ وَلَا يَقْتُلُنَ الْوَلَا يَوْنِيْنَ وَلَا يَعْصِيْنَكَ وَلَا يَعْصِيْنَكَ وَاسْتَغُورُكُهُ بِيَّاللَّهُ وَاسْتَغُورُكُهُ بِيَّاللَّهُ وَاسْتَغُورُكُهُ بِيَّاللَّهُ إِنَّ اللَّهُ عَقُورُكُهُ بِيَّاللَّهُ

ألِّدِ سُزاءِ ١٧

وَلَاتَقْتُلُوۡۤا اُوۡلَادَكُمُ خَشۡیَة اِمۡلَاقِ کُنُ نُرُزُقُهُمُووَ اِیّاکُمُرُ اِنَّ قَتَلَهُمُ کَانَ خِطۡاکُیۡیُرًا ۞

अत-तग़ाबुन 64

14.ऐ वह लोगों जो ईमान/विश्वास लाए! निश्चित ही तुम्हारे लिए तुम्हारे जोड़े और तुम्हारे बच्चों में से शत्रु हैं। बस उनसे सतर्क रहो। और अगर तुम माफ़ करो और तुम हाथ मिलाप करो और तुम क्षमा करो, बस निश्चित ही अल्लाह/भगवान क्षमा करने वाला रहम/दया/ कृपा करने वाला है।

15.निश्चित ही तुम्हारी संपति और तुम्हारे बच्चे वशीकरण हैं। और अल्लाह/भगवान के निकट बड़ा अजर/प्रतिफल है।

आल-ए-इमरान 3

14.लोगों के लिए ज़ीनत/आकर्षण/
अलंकरण दिया गया है
कामनाओं का प्रेम स्त्रियों से
और पुत्रों से और सोने और
चांदी के ढेरों से और निशान
किए हुए घोड़ों से और जानवरों
और खेतों से यह इस सांसारिक
जीवन का मता/साजो सामान
है और अल्लाह/भगवान के
समीप श्रेष्ठ ठिकाना है।

اَلَتَّعَابُن ٢٤

ؽٵؿ۠ۿٵڷڒؽ۬ؽٵڡٮٛٷٙٳ ٳؽۜڡڹؙؙٲ۬ۯٷڿػؙؠٝٷٷڵٳڎٟػؠٛ ۼۘۘڬۊٞٳڷػؿ ٷڶؿؾۼڨٛٷٷڞڞڠٷٳٷؿۼڣۯ ڣٳٮۜٛٵۺػۼۿٷڒڗڿؚؽؖؿ۠

> ٳڹۜؠٵٞڡٛۅٳڷڴؠٛۅؘٲٷڵٳۮؙ؆ؠٝۏؾڹڐؙ ٷڵڷڰۓڹ۫ۘٙۛۛ؆ٷٲڿڗ۠ۼڟؚؽۄٛ

ال عِمْرانَ ٣

ۯؾؙۜٚؽؙڸڵێٵڛؙۘۘۘڞۻۘٵڶۺٛۘٷؾؚ ڡڹٵڵۺٵۦٝٷٳڵڹڹؽؙڹ ٷڵڡٞڬٵڂؽڔٳڵؠؙڰڹؙڟۯۊ ڡڹڬؿڵٵڵڰۿٮؚٷٳڵڣڞٚڿ ٷڵاڬۼؙڵٵڶؠٛڛۊؘؘؘۜڡۼ ۘۘۘۘؗؗٷڵڵڰؘڡػٵۘٷڴڿۊٳڵڰؙڹؽٵ ٷٳڵڰؙؙؙۼڹٛڰٷڂڰڽۅۊٳڵڰؙڹؽٵٛ ٷٳڵڰؙؙؙؙۼڹڰٷڂڰڹؙٷٵڵڮٵڮ

अन-नहल 16

58.और जब उनमें से किसी एक को मुअन्नस/मादा के साथ खुशखबरी दी जाती है तो उसके चेहरे पर काला पन छा जाता है और वह दब/घुट जाता है (अपने अंदर के दुख और शोक के साथ)।

59.वह लोगों से छुपता है बुराई (समझते हुए) जो उसके साथ खुशखबरी दी गई थी, क्या वह इस पर ज़िल्लत/शर्मिंदगी को पकड़ता है या वह उसको मिट्टी में दबा देता है। क्या ही बुरा (व्यवहार) है जो वह शासन करते हैं।

अज़-ज़ुखरुफ़ 43

18.क्या वह जिसका पालन-पोषण भोग विलास में हुआ हो और वह स्पष्टीकरण के अतिरिक्त अगडा करने वाला हो।

अत-तकवीर 81

- 8.और जब वह जो जीवित दबा दी गई उससे प्रश्न किया जाएगा।
- 9.किस अपराध के साथ वह हत्या की गई।

اَلنَّحُولِ ١٦

ۉٳۮٳۺٚۯٳۘػۘۘۘۮۿؙۄ۫ۑٳڵٳؙؙٛٛٛٛٛٛٛٛٛؾؽ ڟؘڷٷۻۿؙۮؙؙؙۿؙڛٛۅۜڐٛٳ ٷۿؙۅػڟؚؽؙڠ۠۞

> يتُوَارِي مِنَ الْقُوْمِرِ مِنْ سُوءِ مَابُثِّ مَ بِهُ اَيْہُسِڪُ اَعْلَى هُوْنِ اَمْ يَكُشُّهُ فِي التَّرَابِ اَلْاسَاءَمَا يَحْكُمُوْنَ ﴿

ٱلنُّرُخُرُفِ ٢٢

ٳٷڡڹؾ۠ؽۺؖٷ۠ٳڣٳڬؚڂؚڵؽۊ ٷۿؙٷڣٵڵڿؚڝٵڡۭۼؽڒؙڞؚؽڒۣ

أَلَّتُكُونِرِ ٨١

ۅؘٳۮٵڶٛٛٛٛؗؗٛؗٛٛٷٛٷڰؙڛؙؠۣڵۘؾٛؖٞٞۨٞٞ

بِأَيِّ ذَٰنُ فَتِلَتُ ۚ

लुकमान 31

17.ऐ मेरे बेटे सलात/नमाज़
स्थापित कर, और हुक्म/आज्ञा
दे मारूफ़/जाने पहचाने के साथ
और मुनकर/बेहरूप के बारे में
वर्जित/मना कर। और सब्न/धैर्य
रख ऊपर जो तुझे पहुंचे।
निश्चित ही वह दृढ़ संकल्प
के कामों में से हैं।

لَقُلْنَ ٣١

ينْبُنَّ اقِمِ الصَّلُوةَ وَأَمُرُ بِالْمُعَرُّوْفِ وَانْهُ عَنِ الْمُنْكِرِ وَاصْبِرُعَلَى مَا اصَابَكُ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْامُوْرِ ﴿

18.और लोगों के लिए अपने गाल गर्व से मत फुला। और धरती पर हर्षोल्लास से न चल (अर्थात जशन/उत्सव या रंगरलियां मनाना)। निश्चित ही अल्लाह/भगवान किसी धोकेबाज़, डींगे मारने वाले को पसंद नहीं करता।

19.और अपनी चाल में तात्पर्य बनाए रख। (अर्थात ज़िन्दगी गुज़ारने का मकसद/तात्पर्य, तरीक़ा और चलन) और(अपने आपको) अपनी आवाज़ से धीमा रख। वास्तव में सब आवाज़ों में से अधिक घृणित आवाज़ गधे की है।(ऊंची, सख़्त या ना पसंदीदा आवाज़ निकालना) ۘۅؘڰٳؾؙڞۼؚڔ۫ڿڽؖڮڸڵٵڛ ۅؘڰڗؿؙۺڣٳ۬ۮڒۻ؞ۘڡڔؘٵ ٳڽؙٳڛؙ۠ؗڰڰؙڲؙؚۘڹؙڰؙڰٛۼٛؿٳڸڣؙٷڕ

ۅٙٳڨٝڝۮڣؘٛؗٛٞٛؗؗؗڡۺ۬ۑڬ ۅٵۼٛڞؙۻؙڡؚڹٛۘۻۅۛڗڮ ٳڹۜٲٮٚٛڒۘٳڵٳػۅٵؚۘڗؚڵڞۅٝؾؙٵػڿؠؽڕؚۯ

अल-हुजरात 49

2.ऐ ईमान वालों/विश्वासियों
अपनी आवाज़ों/ध्विन को नबी/
भविष्यवक्ता की आवाज़/ध्विन
पर बुलंद/ऊंची न करो और
ना ही उससे ऊंची आवाज़/ध्विन
में बात करो क़ौल/कहे हुए के
साथ जैसे कि तुममें से कुछ,
कुछ से ऊंची आवाज़/ध्विन में
बात करते हैं यह कि तुम्हारे
संपूर्ण कर्म नष्ट हो जाएं और
तुम्हें इसका आभास भी ना हो।

أَخُجُرْتِ ٤٩

يَايُهُا الَّذِيْنَ امْنُوْا الاَ تُرْفَعُوُا اَصْوَاتَكُمْ وَلاَ تَجُهُرُوْالَدُوا النَّبِيّ وَلاَ تَجُهُرُوَالَدُوا النَّيِيّ كَجَهْرِيَعُضِكُوْلِكُوا الْقُولِ اَنْ تَحُبُطُ اَعْمَالُكُوْ وَانْهُولاَ تَشْعُرُونَ وَ

अल-इसरा 17

23.और तेरे रब/पालनेवाले ने पूरा
कर दिया कि तुम किसी की
नौकरी नहीं करोगे सिवाय
उसके और माता पिता के साथ
अहसान/अच्छाई करोगे। जिस
समय दोनों में से कोई एक या
दोनों बुढ़ापे को पहुंचे बस उन
दोनों को उफ़ तक न कहो
(यानी बेइज़्ज़ती/अपमान करना
या हिक़ारत/तिरस्कार से नीचा
समझना) और ना ही उन दोनों
को झिड़को, और उन दोनों के
लिए करम/सम्मानित किया
हुआ कौल/बात कहो।

24.और उनके लिए रहम/कृपा/दया
से परों/उड़ान को नीचे रखो
और कह ऐ मेरे रब/पालनेवाले
उन दोनों पर रहम/कृपा/दया
कर जैसे बचपन में उन दोनों
ने मेरी परविरेश/पालन पोषण
किया।

ألِّوسُراءِ ١٧

وقضى رَبُّكَ الْاتَعْبُلُ وَالِلَاكِيَّاءُ وَبِالْوَالِكَيْنِ إِحْسَانًا الْ الْكِبُرَاحَلُّهُمَا الْكِبُرَاحَلُّهُمَا الْوَكِلْهُمَا فَلَاتَقُلْ تَهُمَا الْضِّ وَقُلْ تَهْمَا فَلَاتَقُلْ تَهُمَا الْضِّ وَقُلْ تَهْمَا قَوْلِاكِرِيْهًا ﷺ

> ۅؙۘٳڂٛڣۣۻ۪ٝڷۿؙؠؙٵ ڮڹٵڂٳڶڹۨٳڷ ڡۭڹؙٳڵڒڂؠۊ ۅڨؙڵڒۜڛؚٳۯڂٛۿؙؠؙٵ ڰؠٵڒؾۜڽؽؙڝۼ۬ؽڒٳ۞

अल-अहकाफ़ 46

17.और जिसने अपने माता पिता
के लिए कहा उफ़्फ़ है/बेइज़्ज़ती
अपमान है दोनों के लिए, तुम
दोनों मुझसे वादा करते हो
क्या मैं निकाल दिया जाऊंगा
(ईमान/विश्वास से)। और
वास्तव में मेरे से पहले दौर
गुज़र गए। और उन दोनों ने
अल्लाह/भगवान से मदद चाही,
अफ़सोस/खेद है तुझ पर!
ईमान/विश्वास लाओ, निश्चित
ही अल्लाह/भगवान का वादा
सच्चा है बस वह कहने लगा
नहीं है यह सिवाय पहले लोगों
की पंक्तियाँ हैं।

अल-अनकबूत 29

8.और हमने इंसान को वसीयत की, कि वह अपने माता पिता के साथ अच्छाई करें, और अगर वह जद्दोजहद/परिश्रम/ प्रयास करें कि तू मेरे साथ शरीक/सहभागी करे जिसका कदापि उसके साथ तेरे पास जान नहीं है, बस तू उन दोनों का अनुसरण न कर। मेरी ही ओर तुम सब लौटोगे, बस मैं तुम्हें बताऊँगा/पेशनगोई करूँगा जो तुम कर्म कर रहे थे।

ٱلٰاکمٰقافِ ٤٦

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِكَ يُواُفِّ لَّكُمَّا اَتَعِلَ نِنِي اَكُ اُخْرَجَ وَقَدُ حَكَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيَ وَهُمَا يَسْتَغِيْنُ اللّٰهِ وَيُلِكَ الْمِنْ إِنَّ وَعُدَا اللّٰهِ حَقَّ ﴾ فيقُولُ مَا هٰذَا إِلَّا اَسَاطِيْرُا لَا وَلِيْنَ اللّٰ فيقُولُ مَا هٰذَا إِلَّا اَسَاطِيْرُا لَا وَلِيْنَ اللّٰ

ٱلْعُنْكُبُوْتِ ٢٩

وُوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ كُسُنَّ وَانْ جَاهُ لِكَ لِتُشُرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمُّ فَالْا تُطِعْهُهَا الْيُّ مَرْجِعُكُمْ فَانْتِئَكُمْ لِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۞

लुक़मान 31

15.और यदि वह तुझसे
जद्दोजहद/प्रयास करें कि तू
मेरे साथ किसी को शरीक/
सहभागी ठहराए जिसका तुझे
इल्म/ज्ञान नहीं बस तू उन
दोनों का अनुसरण ना कर
और मारूफ़/जाने पहचाने के
साथ उन दोनों का दुनिया में
साथ दे। और उस व्यक्ति की
पैरवी कर जो मेरी तरफ़
प्रतिनिधित्व करता है। फिर
तुम्हें मेरी ही ओर लौट कर
आना है बस मैं तुम्हें बताऊँगा
जो कुछ तुम किया करते थे।

نَقُلُنَ ٣١

وَانْ جَاهَاكُ عُلَى اَنْ تُشْرِكَ، مَالَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمُّ الْ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّ نَيَامَعُرُ وْقَالُ وَّا تَيْعُ سُنِيْلُ مَنْ اَنَابُ إِلَيَّ تُمَّرِ إِلَىٰ مَرْجِعُكُمْ فَانْتِ عُكُمْ رِبِمَا كُنْ تُمْرِيَّ عَمْمُ وْنَ ﴿

लुक़मान 31

33.ऐ लोगों को अपने रब/पालनेवाले से परहेज़ करो और डरो उस दिन से जिसमें पिता नहीं प्रतिफल देगा अपने बेटे के बारे में और न बेटा प्रतिफल देगा किसी चीज़ मैं अपने पिता के बारे में। निश्चित ही अल्लाह/भगवान का वादा सच्चा है। बस तुम्हें सांसारिक जीवन धोखा न दे। और तुम्हें अल्लाह/भगवान के साथ वह धोखा न दे धोखा देते हुए।

لَقُلْنَ ٣١

ؽٵؿۿٵڶػٵڛۢڷؾۘڠؙۏٙٳۯڽۜؖڲؙۄ۫ ۅٳڂۛۺۉٳؽۏڡٞٳ ٷڮؠٷٛٷؙڋۿۅۘڿٳڔٷؽٷٳڸؠ؋ۺؽڰ ٳٮۜٷۼۮٳڛ۠ڮڂۘۊٞ ڣڮٳؾۼؙڗڽۜڰۯٳڂڮۏٷٵڶڽؙڹؽٳ؞ ۘٷڮۼڗڽڰۯٳۺؗڝؚٲۼۯۏۯڛ

34.निश्चित ही अल्लाह/भगवान के पास घड़ी का ज्ञान है। वह बारिश अवतरित/बरसाता है, और वह ज्ञान रखता है जो रहमों में है। और नफ़्स/ मनोभाव अवगत नहीं रखता की वह कल क्या कमाएगा और कोई नफ़्स/मनोभाव अवगत नहीं रखता कि किस धरती पर उसे मौत आएगी। निश्चित ही अल्लाह/भगवान जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

ٳػٞٳٮڷٚۮۼؚڹ۬ۘۘۘۘۘۘڽٛٷڴؠؙٳڶۺۜٵۼۊؚ ٷؽؙڔۜٞڷؙٵڵۼؽؙؿٞ ۅؘؽڬۘۮۄؙڶڧٳڵۯڿٵۄؚڔ ۅؘٵػۮڔؽ۬ڣٛڛٛ؆ٵڎٵڰڛؚٛۼڰٳۥ ۅٵػۮڔؽ۬ڣٛڛٛڽٳؠۜٵۮۻۣۿٷٛؾؙ ٳٮۜٛٳۺ۠ڰۼڸؽٷڿڔؽڒۜ۫۞۫

अल-बक़रा 2

233.और माएँ अपनी औलाद को
गिज़ा दें/दूध पिलाएं दो मुकम्मल
माहौल/प्रतिवेश को पूरा करते
हुए......

अल-अहक़ाफ़ 46

15.और हमने इंसान को वसीयत 🌿 की, कि वह अपने माता पिता के साथ एहसान/उत्तम करें। उसकी माँ ने उसका हमल/गर्भ अप्रियता से उठाया और उसने उसे अप्रियता से जना और उसे हमल/गर्भ की और उसके द्ध छुड़ाने की अवधि तीस माह है यहाँ तक वह अपनी प्रौढ़ता को पहुंचा और वह पहंचा चालीस साल को, उसने कहा, मेरे रब/पालनेवाले मेरे लिए निय्क्त कर दे यह कि मैं श्क्र/आभार करूँ तेरे अन्ग्रह का जो तूने मुझ पर और मेरे माता पिता पर इनाम/प्रस्कृत किया और यह कि मैं सही कर्म करुं कि तू उससे सहमत हो जाए और मेरे लिए मेरी संतान में सही कर दे। निश्चित ही मैं तेरी ओर लौटता हूँ और निश्चित ही मैं म्स्लिम/समर्पण करने वालों में से हाँ।

اَلۡبَقَرَةِ ٢

ۅؘٳڶۅؙٳڶ؇ؾؙؽؙۯۻؚۼؽ ٳؘٷڵڒۮۿڽٞػٷڶؽڹؚػٳڡؚڶؽڹۦ۔۔۔

اَلْاَحْقَافِ ٢٦

अत-तौबा 9

23.ऐ वह लोगों जो विश्वास लाये हो तुम अपने पूर्वज और अपने भाइयों को वली/रक्षक नहीं पकड़ो अगर वह विश्वास (इस्लाम/सलामती प्राप्त करने के निर्णय) के ऊपर कुफ़/इनकार से प्रेम करते हों। और जो कोई तुममें से उनको वली/रक्षक पकड़ेगा तो बस वही लोग अत्याचारी हैं।

24.कह दे कि यदि त्म्हारे पूर्वज और तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारे जोड़े, और त्म्हारे सहभागी और वह सम्पत्ति जिनसे तुम पाबंद/बद्ध हो और वह व्यापार जिसके तम्हें न चलने का भय हो। और वह निवास की जगहें जिनसे तुम सहमत हो तुम उनकी ओर ज्यादा प्रेम रखते हो बजाय अल्लाह/भगवान और उसके रसूल/संदेशवाहक और उसके मार्ग में जिहाद/ प्रयास/परिश्रम करने के फिर ठहरो यहां तक कि अल्लाह/ भगवान अपने आदेश के साथ आ जाये। और अल्लाह/भगवान फ़ासिक़/स्वतंत्र विचारक सम्दाय का मार्गदर्शन नहीं करता

التُوْرَةِ ٩

يَايِّهُا الَّذِيْنَ امْنُوْا لَاتَنِّخِذُ فُوَا اَبَاءَكُمُ وَاخُوانَكُمْ اَوْلِياءَ انِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيْمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمُّ مِنْكُمُ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمُّ مِنْكُمُ

قُلُ إِنْ كَانَ الْآوُكُوُ وَابُنَا وُّكُمْ وَاخُوائِكُمْ وَازْوَاجُكُوْ وَعَشِيرَتُكُمُ وَعَشِيرَتُكُمُ وَمَسْكِنُ أَخْشُونَ كَسَادَهَا وَمَسْكِنُ تَرْضُونَهَ وَمَسْكِنُ تَرْضُونَهَ وَمَسَادِنُ شَوْنَهَ وَمَسَادِنُ اللهِ وَرَسُولِهِ وَاللّٰهُ لَا يَهُدِي وَاللّٰهُ لَا يَهُدِي

14

45.और नूह ने अपने रब/पालनेवाले को पुकारा, बस कहा ऐ मेरे रब/पालनेवाले निश्चित ही मेरा बेटा मेरे परिवार से है। और निश्चित ही तेरा वादा सच्चा है और तू हुक्म/शासन करने वालों में श्रेष्ठ/उत्तम हुक्म/शासन करने वाला है।

46.उसने कहा ऐ नूह निश्चित ही वह (तेरा बेटा) कदापि तेरे परिवार में से नहीं है। निश्चित ही उसका कर्म सही करने वाले के अतिरिक्त है। बस तू मुझसे प्रश्न ना कर जिसका तुझे कदापि उसके साथ ज्ञान नहीं है। निश्चित ही मैं तुझे उपदेश करता यह कि तू अज्ञानियों में से हो जाएगा।

47.उसने कहा मेरे रब/पालनेवाले निश्चित ही मैं पनाह/शरण मांगता हूँ तेरे साथ यह कि मैं तुझसे प्रश्न करूँ, जिसका उसके साथ मुझे कदापि ज्ञान न हो। और यदि तूने मुझे क्षमा न किया और मुझ पर रहम/दया/कृपा न की तो मैं नुक़सान/हानि उठाने वालों में से हो जाऊंगा। هُوُدِ ١١

ۅؘڹٳۘؗؗڐؽٮٷٛڿۜڗؾؚڬ ڡؙڡۧٵڶڔؾؚٳڹؖٳڹٛڹؽ۬ڡؚؽ۬ٳۿڵؚ ۅؘٳڹۜۅؙۼۘۮڮٳڬؿ۠ ۅؘٳڹٛڎٳڿػۄ۠ٳڬڮؽڹٙ۞

قَالَ يَنُوْحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ اَهُ لِكَ إِنَّهُ عَمَكَ غَيْرُصَا رَجِرَتُ فَالاَتَسُكُلُنِ مَالَيْسَ لَكَ يِهِ عِلْمُ^و مِنَ الْجُهِلِيْنَ مِنَ الْجُهِلِيْنَ ۞

قال رَبِّ إِنِّنَ ٱعُوٰذُ بِكَ ٱنْ اَمْعَلُكَ مَالَيْسَ لِي بِهِ عِلْمُرُّ وَ اِلْاَتِغُفِرُ لِيُ وَتَرْحَنِيْ ٱكُنْ مِّنَ الْخُسِرِيْنَ ﴿

नूह 71

28.ऐ मेरे रब/पालनेवाले क्षमा कर दे मुझे और मेरे माता पिता को ओर जो कोई मेरे घर में ईमान/विश्वास वाला। होकर प्रवेश हुआ और ईमान/विश्वासी पुरुषों और ईमान/विश्वास स्त्रियों को क्षमा कर दे। और तू नहीं बड़ा अत्याचारियों को, सिवाय तबाही/विनाश के।

मरयम 19

42.जब उस (इबराहीम) ने अपने पिता के लिए कहा ऐ मेरे पिता तू क्यों बंदगी/नौकरी करता है, जो न सुन सकता है और न बसारत/अंतर्हिष्ट रखता है और न वह तेरे बारे में किसी चीज़ से गनी/धनी कर सकता है।

43.ऐ मेरे पिता निश्चित ही वास्तव में मेरे पास ज्ञान में से आया है जो तेरे पास नहीं आया, बस मेरा अनुशरण कर। मैं तुझे ठीक मार्ग का मार्गदर्शन करता हूँ।

نُوْجِ ٧١

ڒۘؾؚٵۼٝڣۯڮٛۅڶؚۅٳڶؚۘۘڵ؆ۜ ۅڸؠؙڹؙۮڪڵڔؽؾؽۘۘۿٷٝڡؚڹ۠ٵ ٷڸڵۿٷٝڡؚڹؽ۬ڹؘٷٲڵؠٷٛڡؚڹ۠ؾ ٷلاتزدؚاڵڟٚڸؚڡ۪ؠ۫ڹؘٳڵڰڗڹٵڒٵ۞ۧ

هُرُ لَيْهِرَ ١٩

ٳۮ۬ۊٵڶٳۯؠؽۅؽؖٲؠۛڗ ڶؚؗۄڗڠؠؙڹؙ ٵڒؽٮٛۿۼؙٷڒؽؿۻڔۢ ۅؙڒؽؙۼ۫ڹؽ۬ۼڹٝڰۺؙڲٵ؈

يَابَتِ إِنِّ قَالَ جَاءَ نِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَالَمُ يَأْتِكُ فَاتَّبِعُنِیۡ اُهۡدِ كَ صِرَاطًاسُوبًا ﴿

मरयम 19

- 44.ऐ मेरे पिता तू शैतान की नौकरी/बंदगी ना कर निश्चित ही शैतान रहमान/दयावान के लिए ना फरमान/अवज्ञा करने वाला है।
- 45.ऐ मेरे पिता निश्चित ही मुझे भय है कि मेहरबान/दयावान से तुझे अज़ाब/सज़ा छुएगा बस तू शैतान के लिए सरपरस्त/रक्षक बन जायेगा।
- 46.3स (इबरहीम के पिता) ने कहा क्या तू मेरे इलाहों/भगवानों के बारे में नफरत/ईष्या रखता है। अगर तू उससे न रुका तो मैं अवश्य तुझे संगसार कर दूंगा और मुझे लंबे अरसे/समय के लिए छोड़ दे।
- 47.उस (इबराहीम) ने कहा,
 सलामती/शांति हो तेरे ऊपर।
 मैं शीघ्र ही अपने रब/पालनेवाले
 से तेरे लिए क्षमा चाहूंगा।
 निश्चित ही वह मेरे साथ स्नेह
 रखता है।

هُرُلَيْهِرَ ١٩

ؽؘٲؠۘؾؚڵٳؾۼۘڹڔٳۺؽڟؽ ٳؾۜٳۺؽڟؽڲٳڹ ڸڵڗڂڔڹۼڝؾؖٳ؈

ؽؘٲؠؙػؚٳڔٚٞؽٙٲڬٵڡؙ ٲؽٙڲٞۺۘڮؘٷٳڮ۠ڡۭٚڹٳڵڗؖٛڂڶڹ ڡؘؿڰؙٷٛؽڸڷۺۜؽڟڹۅڸؾۜٳ؈

قَالَ أَرَاخِبُ ٱنْتَعَنَٰ الْهَرِّيُ يَالِبْرِهِ يُمُّ لَمِنْ لَمُرِّنْتُهُ لَارُجُمُنَّكُ وَاهْجُرُرِنْ مَلِيًّا ۞

> قَالَ سَلَّمُ عَلَيْكَ سَاسَتُغُفِرُ لِكَ رَبِّيْ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿

अश-शुआरा 26

86.और क्षमा कर दे मेरे पिता के लिए निश्चित ही वह पथश्रष्टों में से है।

اَلشُّعَرَآءِ ٢٦

ۅۘۘۘٲۼٛڣؚۯٳٳٳؽٙ ٳٮۜٞۘٷػٵٮٛۯؚڹٳڶۻۧٵٙڸؾؖؽؘ۞۠

इबराहीम 14

40.मेरे रब/पालनेवाले मुझे और मेरी संतान को सलात/नमाज़ स्थापित करने वाला बना दे, ऐ हमारे रब/पालनेवाले हमारी द्आ स्वीकार कर ले।

ۯۜؾؚٵۻٛۼڶڹؽؗۘٛؗٛٛؗٛڡؙڡؚۧؽؗؖۄؙٳڵڞۜڵۅڹٟ ۅؘ*ڡؚ*ڹؙۮؙڗؚؾؿؾؖ ڒؠۜڗٵۅؘٮٛڡٞؾڶۘۮؙٵٙ؞ؚٛ

41.हमारे रब/पालनेवाले हिसाब के स्थापित होने वाले दिन मेरी और मेरे माता-पिता की और मोमिनों/विश्वासियों को क्षमा, कर दे।

رَبَّنَااغُفِرُ لِئُ وَلِوَالِكَ كَيُّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمُ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿

युसुफ़ 12

97.उन्होंने कहा ऐ हमारे पिता हमारे लिए हमारे गुनाहों/ अपराधों को क्षमा कर दे निश्चित ही हम ही ख़ता/ ग़लती करने वाले हैं।

98.उस (याकूब) ने कहा मैं शीघ ही अपने रब/पालनेवाले से तुम्हारी क्षमा चाहूंगा। निश्चित वह क्षमा करने वाला, रहम/ दया/कृपा करने वाला है।

आल-ए-इमरान 3

8.ऐ हमारे रब/पालनेवाले हमारे दिलों को टेढ़ा ना कर दे पश्चात इसके जब तूने हमें मार्गदर्शन दिया। और हमें अपने पास से रहमत/दया/ कृपा प्रदान कर निश्चित ही तू ही प्रदान करने वाला है।

अल-फ़्रक़ान 25

74.और वह लोग जो कहते हैं

ऐ हमारे रब/पालनेवाले हमारे
अज़वाज/जोड़े और हमारी
संतान में से हमारे लिए
आंखो की ठंडक करार दे
और हमें परहेज़गारों का
इमाम/प्रमुख बना दे।

رور پوسف ۱۲

قَالُوْايَابَانَااسَتَغُفِرُلِنَادُنُوْبَنَا إِنَّاكُنَّا خُطِيِنَ

ۊؙٳڶؘٛڛؗۅ۬ڡؙ ٵڛؙؾۼ۬ڣؚۯڰڎؙڒۑٚٞ ٳٮۜٚڬۿؙۅؙٳڵۼؘڡؙٛۅؙۯٳڶڗۜڿؽ۫ۄؙ؈

اليعِمُزنَ ٢

ۯؾؙڹالاٚؿ۠ڒۼۛۛڠؙڵٷؘڹڹٵؠۼ۫ۘۘۘ۫ۘ۫ؽٳۮ۬ۿۘٙٙٙؽؽؘڬٵ ۅؘۿڹٛڶڬاڡؚڹ۫ڵۘٞڰؙڹؙڬۮؘۯڂٛڴ ٳٮؙٞڮٲڹ۫ػٲڶۅؘۿٙٵڹٛ۞

أَلْفُرُقَانِ ٢٠

ۉٳڷۜۮؽ۬ؽؘؿٷٛٷٛؽ ۯؾۜڹؙٵۿڹٛڬٵ ڡؙڹٵۮ۬ۉٳڿڹٵۉۮ۠ڒؾ۠ؾؚڹٵ ڡؙڒۜ_{ڰٵ}ٛٷؽؙڹ ۊٳڿ۫ۼڶؽٵڸؚڶؙٛۿؾٞۊؚؽ۬ؽٳٵٵڰ

प्रश्न और उत्तर

अल-अहज़ाब 33

5.उनको उनके पिताओं के नाम से पुकारो वह अल्लाह/भगवान के निकट अधिक इन्साफ़/न्याय की बात है, बस अगर तुम उनके पिताओं को ना जानते हो बस वह निर्णय में तुम्हारे भाई और तुम्हारे सरपरस्त/ रक्षक हैं। और कदापि तुम्हारे ऊपर ग्नाह/अपराध नहीं अगर तुम उसके साथ ग़लती से करते हो और लेकिन जो तुमने अपने दिली इरादे से/ जानबूझकर कहा हो और अल्लाह/भगवान क्षमा करने वाला, रहम/दया/कृपा करने वाला है।

ٱلْاَحْزَابِ ٢٣

أَدْعُوْهُمُ الْأِبَانِهِمُ هُواَقْسُطُ عِنْدُاللَّةِ فَانْ لَنْمُ تَعْلَمُوْاَابَاءَهُمُ فَاخُوانُكُمْ فَاللَّذِي اللَّهِ عَنِي وَكَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَا اَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَانَ اللَّهُ عَقْوُرًا لَرَّحِيْمًا ۞ وَكَانَ اللَّهُ عَقْوُرًا لَرْحِيْمًا ۞

प्रश्न1.कुरआन ऐसे बच्चे को क्या स्थान देता है जिनके पिता का ज्ञान ना हो?

मरयम 19

- 31.और जहां कहीं मैं हूँ मुझे बरकत/गौरवान्वित बनाया गया। और मुझे सलात/नमाज़ के साथ और मुझे औचित्य के साथ वसीयत की गई जब तक मैं जीवित हूँ।
- 32.और मैं अपनी माँ के साथ अच्छाई करूँ और मुझे कदापि जबर/सख्ती करने वाला नहीं बनाया गया।

مَوْكِيمَ ١٩

ٷؘؘۧۜٛٛڮۼۘڬڹؽؗڡؙٛڹڔؙڰٵٳؽڹٵٲڬٛڹٛؾؙ ٷٷۻڹؽؠٳڶڝۜڶۅۊٟۉڶڵڗؙڮۅۊ ٵۮؙؙؙٛڡٛؾؙڂؾؖٳ۞ۜ

ٷۘڹڒؖٳؠۅٳڶؚۘۘۘڔؽؗ ۅؙڮۮڲۼۘٷڹؽڮؾٳۯٳۺؘۊؚؾۜٳۛ

प्रश्न2.हम बचपन से सुनते आ रहे है कि माँ के पैरों के नीचे जन्नत/स्वर्ग है, क्या यह सच है? इसका स्पष्टीकरण करें?

जारी है.....

मरयम 19

- 12.याहया, किताब को मज़ब्ती के साथ पकड़ लो। और हमने उसको जवानी में ही हुक्म/ शासन दिया।
- 13.और हमारे पास से सहानुभूति
 रखने वाला और न्यायोचित
 किया हुआ था। और वह परहेज़
 करने वाला था।
- 14.और उसे (यानी याह्या को)
 अपने माता-पिता के साथ
 अच्छाई करने वाला बनाया
 और उसे (यानी याह्या को)
 कदापि जबर/सख्ती करने
 वाला और अनुसरण ना करने
 वाला नहीं बनाया।

अल-क़सस 28

9.और फ़िरओन की बीवी ने कहा, (यह बच्चा) मेरे और तेरे लिए आँखों की ठंडक है, तू इसे क़त्ल/हत्या न कर, संभव है यह की वह हमारे लिए लाभदायक हो, या हम उसे पुत्र बना लें, और वह शऊर/ आभास नहीं रखते।

هُرُكِيمَ ١٩

ؠڮؽؽؙڿؙڹٲڶڮڗڹڔڣؙۊۜۄٚؖ ٷٳۺؙڬؙٲڂٛػؙۄؘڝٙۑؾؖٵڽٞ

ٷۜڮڬٵٮٞٵۺٙؽٙڰڽٛٵٷۯڵۅ۬ڰٵ ٷڲٵڹؘؾقؚؾؖٵ۞

ۊۜٛڹۘڔٞٞٳۑۅؘٳڶؚۘۘۘؽؠؗۅ ۘٷػڡ۫ؗڒؽػؙڹٛڿۜٵؚڒٳۼڝؚؾۘٵۛ

أَلْقَصَصِ ٢٨

ۉۘۊٵڷؾؚٳۘؗٛؗؗؗٛڡؙڒٲۘۘؿؙۏۯٛػۏۘۘۘڹ ٷڗٮؙٛۼؽ۬ڹڔٚٞۨڵٷڵڰ ۘ ٷٮٙؿڶؽٲڹٛٷڰ ٵٷڹؾڿڶٷۘٷڶڰٵ ٷۿؙؙؙٞؗۿؙڵٳؽؿٛٷۯؙۏڽ۞

जारी है.....

अत-तहरीम 66

11.अल्लाह/भगवान एक उदाहरण से ईमान/विश्वासियों के लिए ज़रब/प्रहार करता है फ़िरओन की पत्नी की जब उसने कहा ऐ मेरे रब/पालनेवाले मेरे लिए स्वर्ग में अपने समीप एक घर बना दे और मुझे फ़िरओन और उसके अमल/कार्य/कर्म से छुटकारा दे और मुझे अत्याचारी समुदाय से छुटकारा दे।

اَلنَّحَرِيْمِرِ ٦٦

وَضَرِبَ اللهُ مَثَلاً لِلَّذِينَ الْمَنُوا الْمَرَاتَ فِرْعَوْنَ اِذْقَالَتُ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمِلِهِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمِلِهِ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمِلِهِ الْقَوْمِ الظّلِيانِي اللهِ

आल-ए-इमरान 3

37.बस उसके रब/पालने वाले ने उसे अच्छी तरह स्वीकार किया। और उस (मरयम) का बड़ा अच्छा पालन पोषण/परविरश हुई और ज़करिया ने उसकी किफ़ालत/प्रतिभूति की जब भी ज़करिया उसके पास महराब/ कमरे में प्रवेश होता था तो उसने कहा ऐ मरयम तेरे पास यह कैसे आया? उसने कहा कि यह अल्लाह/भगवान के निकट से है। निश्चित ही अल्लाह/भगवान जिसको चाहता है, बेहिसाब जीविका देता है।

ال عِمْرِنَ ٢

فَتَقَبَّلُهَارَبُّانِقَبُوْلِحَسِنِ قَائَبُتَهَانَبَاتًاحَسَنًا وَكِفَّلُمَادَخَلَعَلَيْهَازَكِرِيَّاالْمِحُوابُ وَجَدَعِنْدَهَارِزُقًا وَجَدَعِنْدَهُ الْفُكَرُرُقُ مُنْ يَثْنَاءُ قالَ نِهُومِنْ عِنْدِاللَّهِ وَنَّاللَّهُ يُرُزُقُ مُنْ يَثْنَاءُ بِغَيْرِحِسَايٍ ⊕

प्रश्न3.क्या इस्लाम में किसी दूसरे के बच्चे को गोद लेने की अनुमति है?

जारी है.....

युसुफ़ 12

21.और (अज़ीज़) मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे (युसुफ़ को) ख़रीदा अपनी बीवी/पत्नी से कहा कि उसको अच्छी तरह रखना सम्भव है कि यह हमारे लिए लाभदायक हो। या हम इसे अपना पुत्र बना लें। इस तरह हमने युसुफ़ को उस भूमि में निवासी बनाया। और ताकि हम उसको अहादीस/घटनाओं की व्याख्या सिखाएं और अल्लाह/भगवान तो अपने आदेश पर प्रभावी है। लेकिन अक्सर/अधिकतर लोग नहीं जानते।

يُوسِفُ ١٢

وَقَالَ الَّذِى اشْتَارِيهُ مِنْ مِّضَرِّلا مُرَاتِهَ اَكْرِمِي مَثْوَيهُ عَسَى اَنْ يَنْفَعَنَا اَوْنَتَّخِنَ لَا وَلِكَاا اَوْنَتَّخِنَ لَا وَلِيَّالِيُوسُفَ وَاللَّهُ كَالِكُ مَكَنَّا لِيُوسُف تَأْوِيلِ الْاَحَادِيثِ فَ وَاللَّهُ كَالِبُّ عَلَى اَمْرِهِ وَاللَّنَّ الْمُثَالِنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ وَللْكِنَّ الْمُثَالِنَاسِ لَا يَعْلَمُونَ

अल-माइदा 5

89.अल्लाह/भगवान त्म्हारे दाहिने/ सही से लगू/तात्पर्य रहित बातों पर त्म्हारी पकड़ नहीं करेगा, लेकिन जो तुम दाहिने/ सही के साथ गिरह/बाँध लगाते हो उस पर तुम्हारी पकड़ करेगा, बस उसका प्रायश्चित दस मिसकीनों/गरीबों को खाना खिलाना है। जो तुम अपने अहले खाना/परिवार को लगभग खिलाते हो, या उनको वस्त्र पहनाना है या एक ग़्लाम को आज़ाद/स्वत्रंत करना है। बस जो यह न कर पाए तो बस तीन दिन के रोज़े/उपवास रखे। यह प्रायश्चित है तुम्हारा सही करने का जब त्म हल्फ/सौगंध उठा लो। और अपने दाहिने/सही की रक्षा करो। इस तरह से अल्लाह/भगवान तुम्हारे लिए अपनी आयात/निशानियाँ खोलकर बयान करता है. संभवतः कि त्म शुक्र/कृतज्ञता व्यक्त करो।

اَلْمَائِلُةِ ٥

प्रश्न4.अगर माता पिता या बच्चों को यह आभास हो कि उनमें कोई अपनी ज़िम्मेदारियां क़ुरआन के अनुसार पूरी नहीं कर रहा है तो उन्हें अपने आपको कैसे सही करना चाहिए? क़ुरआन की आयात से इसका स्पष्टीकरण करें?

अल-कुरआन क्या कहता है

महम्मद शेख के बारे मे

- 01. रेहान अल्लाहवाला द्वारा मुहम्मद शेख का इंटरव्य (2011)
- 02. अहमद दीदात द्वारा वैश्विक छात्रों का दावा प्रशिक्षण, IPCI डरबन SA (1988)
- 03. मुहम्मद शेख का कुरआन से मार्गदर्शन का सफ़र ? (2010)
- 04. मुहम्मद शेख पर जानलेवा हमला (2005)
- 05. म्हम्मद शेख की जबल-ए-न्र की यात्रा (2006)
- 06. महम्मद शेख दवारा किया गया हज (2006)
- 07. महम्मद शेख दवारा किया गया उमरा (2006)
- 08.मुहम्मद शेख दवारा खतम-ए-कुरआन की दुआ (2005 के बाद)

बहस

- 11. म्हम्मद शेख की इस्माईली डॉक्टर से बहस। (1989) (उर्दू)
- 12. प्रश्नोत्तर: मुहम्मद शेख और पत्रकार (2008) (उर्द्)
- 13. महम्मद शेख की परवेज़ी को मानने वालो से बहस (2013) (उर्द्)
- 14. मुहम्मद शेख की दो सोमाली इमामों से बहस(अंग्रेजी) (2013)
- 15. महम्मद शेख की पादरी जेफ़री राइट से बहस (2013) (अंग्रेजी)
- 16. प्रश्नोत्तर : मुहम्मद शेख और अमेरिकी लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 17. प्रश्नोत्तर : मुहम्मद शेख और कनाडा के लोग (2013)(अंग्रेजी)
- 18. महम्मद शेख की कनाडा में अहमदी मुस्लिमो से बहस(2013)(अंग्रेजी)
- 19. म्हम्मद शेख की म्फ्ती अब्दल बाक़ी से बहस (2016) (उर्दू)
- 20. महम्मद शेख ने दुबई के लोगों को आमंत्रित किया (2018)(अंग्रेजी)

अपने भगवान को पहचानें ै

- 21. अल-कुरआन क्या कहता है भगवान और भगवानों के बारे में(2011)
- 22. अल-क़्रआन क्या कहता है शैतान/इब्लीस के बारे में(2004)

चुने गए व्यक्तित्व

- 23. इब्राहिम का ख़वाब(PBUH) (2011))
- 24. मुसा की किताब(PBUH) (2011)
- 25. मरयम (PBUH)(2009)
- 26. क्या मरियम अल मसीह ईसा की एकमात्र माता-पिता हैं?(PBUH) (2013)(अंग्रेजी)
- 27. अल मसीह ईसा इब्ने मर्यम(PBUH) (2006)
- 28. अल मसीह ईसा की भविष्यवाणियाँ उनके जीवन और मृत्यु के बारे में। (2013)(अंग्रेजी)
- 29. महम्मद (PBUH) (2002)
- 30. मूसा का पहाड़ (PBUH) (2017)

अल्लाह / भगवान की किताब े

- 31. अल -किताब (2011)
- 32. अल-क क्रआन(1991, 2008)
- 33. अल्लाह/भगवान की किताब (2017)(अंग्रेजी)
- 34. क्या कुरआन अल्लाह / भगवान का कलाम/शब्द है?
- 35. तोरात और इंजील (2007)(2011)
- 36. जबूर (2008)
- 37. हदीस (2005)
- 38. सुन्नत (2004)
- 39. हिकमत (2008)
- 40. रूह (2008)
- 41. जवाने/भाषाएं (2008)
- 42. हिदायत /मार्गदर्शन (2009)

वक्ता मुहम्मद शेख के द्वारा

अपनी पहचान/खुद को जानें

- 51. म्स्लिम (1991, 2004)
- 52. अहले किताब (किताब के लोग) (2006)
- 53. बनी इसराईल (इसराईल के बेटे) (2003, 2011)
- 54. औलिया/रक्षक) (2011)
- 55. खलीफा/उत्तराधिकारी (2013)
- 56 इमाम (2013)
- 57. फिरके/संप्रदाय
- 58. मनाफिक
- 59. यहदी और ईसाई (2008)
- 60. अल्लाह बशर/इंसान से कैसे कलाम/बात करता है? (2019)

पारिवारिक जीवन

- 61. हिजाब/पर्दा (2011)
- 62. निकाह/विवाह (2009)
- 63. मिया बीवी/पति- पत्नी के संबंध (2011)
- 64. फाहिशा/अश्लीलता (2008)
- 65. तलाक (2009)
- 66. माता-पिता और बच्चो का संबंध (2010)

पैसे को कैसे संभालें

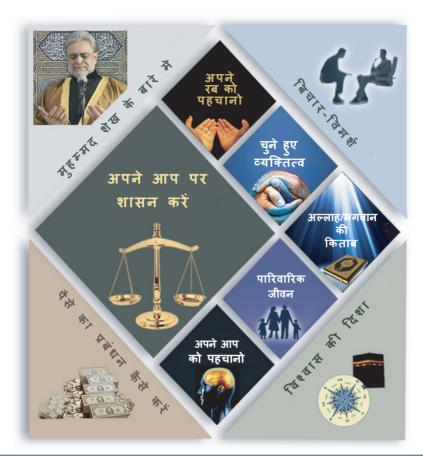
- 71. सदका और जकात/दान पुण्य (2006)
- 72. रिबा/बढ़ोतरी (2006)
- 73 विरासत

विश्वास की दिशा

- 81. इस्लाम और मुस्लिम (पाकिस्तान अमेरिकी सांस्कृतिक केंद्र) (1991) (अंग्रेजी)
- 82. इस्लाम (2004)
- 83. इबराहीम का मजहब/धर्म (PBUH) (2010)
- 84. सीधा रास्ता (2013)
- 85. सिफारिश (2010)
- 86. कावा और किब्ला (2007)
- 87. मस्जिद (2013)
- 88. सलाह/प्रार्थना (2011)
- 89. मूहतर्म महीने/वर्जित महीने (2006)
- 90. रोजा/व्रत (2008)
- 91. उमरा और हज (2013)
- 92. उम्म-उल-क्रा/शहरों की मां (2019)

ह्क्म वाली आयात से अपने आप को नियंत्रित करे

- 101. जिहाद/संघर्ष (2006)
- 102. कत्ल/शारीरिक हत्या (2005)
- 103. नफसियाती कत्ल/मनोवैज्ञानिक हत्या (2010)
- 104. देहशतगरदी/आतंकवाद (2006)
- 105. जंग/युद्ध (2006)
- 106. किसास/बदल (2012)
- 107. नफसियाती जख्मों की तसल्ली/मानसिक दर्द की तसल्ली (2012)
- 108. अखलाक/अच्छा व्यवहार



□ एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है जो जरूरतमंदों, अनाथों,
गरीबों और बेघरों की मदद करने में व्यस्त है, चाहे उनका धर्म और रंग
कुछ भी हो। अंसाररुल्लाह / अल्लाह के सहायक बनने के लिए हमारे साथ
हाथ मिलाएं, स्वयंसेवक बनें और दावा के हमारे मिशन का समर्थन करें,
यानी दुनिया की जनता के लिए अल-इस्लाम का निमंत्रण। अल्लाह आपको
पुरस्कृत करे और इस दुनिया में और उसके बाद (आमीन) आपकी उदारता
के लिए आशीर्वाद दे।

दान करे ओर संपर्क करे :www.iipccanada.com/donate/

